International Journal of Applied Research 2016; 2(2): 800-802

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(2): 800-802
www.allresearchjournal.com
Received: 19-01-2016
Accepted: 20-02-2016

Shanno Devi
Research Scholar, Deptt. of Hindi, J.J.T. University, Jhunjhnu, Rajasthan, India.

Correspondence
Shanno Devi
Research Scholar, Deptt. of Hindi, J.J.T. University, Jhunjhnu, Rajasthan, India.

नारी विमर्श

Shanno Devi

भारतीय समाज में अस्तित्व हेतु महिलाओं का संघर्ष

हमारे देश में अतीत से ही नारी का सर्वोपरि स्थान रहा है। राधा का अस्तित्व स्वीकारना और सीता की सामान्यता को राम के साथ जोड़कर विशिष्टता देना इसके प्रमाण हैं। "भारतीय धर्म शास्त्र नारियों की करूणा, ममता, महत्ता व वीरता से भरा पड़ा है। नारी को यह सम्मान मिलने के पीछे सदियों से उनके तप, त्याग, सेवा, साधना तपश्चयी, बलिदान, निस्वार्थ प्यार तथा श्रद्धा, करूणा, आत्मीयता, ममता, स्नेह एवं संवेदना का एक स्वर्णिम इतिहास है। प्रकृति ने भी नारी को अपार करूणा और प्रेम से विभूषित करके धरा पर भेजा है।" [1]

नारी का अस्तित्व और स्वतंत्र स्वरूप

स्त्री हो या पुरूष दोनों पहले इंसान हैं व स्वतंत्रता इंसान का बुनियादी हक है। नारी का स्वतंत्र अस्तित्व सबके लिए उलझन इसलिए है कि आज का वातावरण अनैतिक, असुरक्षित एवं आतंक से पूर्ण है। उसमें बिना बलवान पुरूष चौकीदार के नारी का जीना ही विडम्बना बन चुका है। अभी भी नारी को जीने के लिए 'व्यावहारिक नैतिक मर्यादाएं हैं एवं थोपी हुई मान्याताएं' एक तरफ वह पाश्चात्य नारी की तरह आत्मनिर्भर है, दूसरी तरफ वहां पुराना अधकचरा बौना नारीत्व का आदर्श बीच में उलझता टूटता नारी का बंधन है। [1]

"नारी के स्वतंत्र अस्तित्व के संबंध में विचारणीय है कि क्या भारतीय नारी पुरूष के सहारे के बिना अपना स्वतंत्र अस्तित्व कायम कर सकती है। पौराणिक प्रवचना से निकलकर भारतीय नारी ने आज संपूर्ण समाज को उनकी स्थिति पर पुनः विचार करने को बाध्य किया है। अज्ञान, अशिक्षा तथा अंधविश्वासों की श्रृंखलाओं को तोड़कर भारतीय नारी ने कदम उठाया है। इससे वह झूठा विश्वास टूट गया है कि नारी को पग–पग पर किसी भी रूप में पुरूष का सहारा आवश्यक है। शिक्षा एक ऐसी वस्तु है जो मस्तिष्क के द्वारों को खोल देती है। हर क्षेत्र में अपना प्रवेश कर भारतीय नारी स्वावलंबी बनती जा रही है। आर्थिक रूप से स्वावलंबी होने के कारण उसके अंदर आत्मविश्वास की वृद्धि हुई है।"

"नारी के स्वतंत्र अस्तित्व के संबंध में विचारणीय है कि क्या भारतीय नारी पुरूष के सहारे के बिना अपना स्वतंत्र अस्तित्व कायम कर सकती है। पौराणिक प्रवचना से निकलकर भारतीय नारी ने आज संपूर्ण समाज को उनकी स्थिति पर पुनः विचार करने को बाध्य किया है। अज्ञान, अशिक्षा तथा अंधविश्वासों की श्रृंखलाओं को तोड़कर भारतीय नारी ने कदम उठाया है। इससे वह झूठा विश्वास टूट गया है कि नारी को पग–पग पर किसी भी रूप में पुरूष का सहारा आवश्यक है। शिक्षा एक ऐसी वस्तु है जो मस्तिष्क के द्वारों को खोल देती है। हर क्षेत्र में अपना प्रवेश कर भारतीय नारी स्वावलंबी बनती जा रही है। आर्थिक रूप से स्वावलंबी होने के कारण उसके अंदर आत्मविश्वास की वृद्धि हुई है।" मुख्य रूप से इसी कारण से उसने अपने अस्तित्व को पहचाना है। अपने अस्तित्व को केवल पहचाना ही नहीं वरन् समाज में अपना एक स्थान बनाया है। [2]

कहते हैं, किसी देश की स्थिति–प्रगति का अनुमान लगाना हो तो उस देश में स्त्रियों की स्थिति का अवलोकन अध्ययन करो। इसका दूसरा अर्थ हुआ कि स्त्री–अस्मिता और देश की अस्मिता का जुड़ाव बिंदु एक है।

जिस देश में स्त्री जिंदा जलती हो, उसकी हत्या या भ्रूण हत्या की जाती हो, उसे आत्महत्या के लिए मजबूर किया जाता हो, जहां निसंतान पुरूष स्वयं नपुंसक होते हुए भी अपनी कमजोरी छिपाने के लिए पत्नी को दोषी ठहराते हों, जहां लड़के के जन्म पर बधावे बजते हों और लड़की के जन्म पर मातम मनाया जाता हो। वहां मुद्दा अस्तित्व का होगा न कि अस्मिता का?

प्रश्न संगत है। पर इस प्रश्न को उलटकर यूं भी तो रखा जा सकता है, स्त्री–पुरूष परस्पर पूरक होकर भी दो स्वतंत्र इकाइयां हैं। दोनों का स्वतंत्र अस्तित्व है, पर दोनों की स्वतंत्र अस्मिता क्यों

नहीं? [3] अस्मिता का सामान्य अर्थ है, अपने आप की पहचान। अपने 'स्व' की पहचान। अपने अस्तित्व को जानना मनुष्य के लिए ऐसा महत्व कार्य है जो जीवन को सत्य, शिव और सुंदर बना देता है। हमारे उपनिषदों में कहा गया है आत्मानं विधि–अर्थात् अपने आप को जानो।

अतः असीमता की अवधारणा आधुनिकता के साथ आने वाली अवधारणा है। इसका अर्थ है कि स्व की पहचान, अपने होने का बोध। स्त्री भी एक ऐसी संपूर्ण मानवीय इयत्ता है। जो पुरूष से शारीरिक भिन्नता लिए असीम संभावनाओं का वैसा ही पंजीभूत रूप है। जो अपनी आंतरिकता, वैयक्तिकता और स्वतंत्रता द्वारा जीवन के उच्चत्तम सोपाणों को स्पर्श कर सकती है लेकिन दिनोंदिन विकसित होती सभ्यता और आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों की विसंगतियों और जटिलताओं के साथ केवल लिंग आधार पर किए गए सामाजिक वर्गीकरण में स्त्री का अस्तित्व क्रमशरू पेचीदगियों के घेरे में उलझता गया। समाज का स्वरूप पुरूष सत्ता प्रधान होता गया और स्त्री अस्मितहीन दुर्बल शोषिता। [4]

भारतीय संदर्भ में अस्मिता का अर्थ, स्वरूप आधार और सामाजिक परिपेक्ष्य के अनेकानेक रूपों का अध्ययन करने के पश्चात यह प्रश्न सहज ही मन में उठता है कि स्त्री चेतना किसे कहा जाए? क्या इसका कोई सार्वभौमिक सिद्धांत हो सकता है? यह बहुत कठिन है कि क्योंकि स्त्री चेतना के अनेक स्तर हैं। जिनके अनुभव पृथक नहीं किए जा सकते। स्त्री का नजरिया, वस्तु, घटना, विचार आदि सभी चीजों को प्रक्रिया में रखकर देखता है। स्वतंत्र भारत के मुक्ति संघर्ष में अनेक स्त्रियों ने भागीदारी की थी। 1857 के पहले गदर से भी पहले संयासी विद्रोह की शुरूआत जिन क्रांतिकारियों से हुई थी उसकी प्रेरणास्त्रोत एक स्त्री थी– रानी देवी चौधरानी। स्वतंत्रता संग्राम के मुक्ति संघर्ष में दो तिहाई संघर्ष के बावजूद स्त्रियों का स्थापन्न का संघर्ष माना गया है एवं उनकी भूमिका के अनुगामी तथा सहयोग की सीमा तक ही माना गया।

भारत का मुक्ति संघर्ष और भारतीय स्त्रियों का मुक्ति आंदोलन अलग प्रक्रियाएं कभी नहीं रही। यह अवश्य है कि हमारे यहां स्त्रियों ने अपने अधिकारों के लिए कभी भी पुरूषों के विरूद्ध मोर्चा नहीं खोला। स्त्री अधिकारों के प्राचीन भारतीय उत्कर्ष की बात छोड़ दें तो नवजागरण काल से लेकर स्वराज्य संघर्ष की पूरी अवधि में भारतीय स्त्रियां पुरूष सुधारकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सामाजिक रूढियों और देश की गुलामी के विरूद्ध एक साथ संघर्ष करती दिखाई देती हैं। [5]

भारतीय नारी की इसी दुर्दशा को ध्यान में रखते हुए भगवतशरण उपाध्याय ने नारी के स्वर में लिखा है – मैं नारी हूं–भारतीय नारी। मेरी कहानी अभिशप्त की है। इस कहानी के प्रचार पर वेदना का विस्तार है, रक्त का रंग उस पर चढ़ा है, दुर्भाग्य के कीचड़ वह सनी है। [6]

नारी कितनी पराधीन, निराश्रित और सभ्य समाज की क्रूरतापूर्ण व्यवस्था की शिकार रहती है। इसकी चित्र उल्लिखित संदर्भ से साफ दिखाई देता है। नारी के साथ पुरूष के षडयंत्र का एक रूप प्रस्तुत करते हुए भगवतशरण उपाध्याय लिखते हैं। उत्तर में योगिनी और दक्षिण में देवदासी के रूप में यतियों के यतन का केंद्र हुई। कलिंग से कामरूप तक, कामरूप से विंध्यांचल तक शक्ति के रूप में मैं नंगी पूजी जाने लगी और मेरी संज्ञा कुमारी हुई। मैंने उस समय जो–जो व्यथा सही, मर्दों–यतियों के अमानुषिक कृत सहे, वे कथनीय हैं। उड़ीसा के मंदिरों पर फिर भी मेरे घृणित चित्रण किए गए। जो गोप्य था, घर की चारदीवारी के भीतर गुहयकर्म था, वह देव मंदिरों की बाहरी दीवारों पर अंकित हो गया। मनुष्य कितना गिर सकता है, मां कहकर नारी को कितना नीचे खींच सकता है। [7]

एक औरत की बेबसी, लाचारी, गैरबराबरी और प्रताडना के विरूद्ध प्रतिरोध का जो तीखा स्वर तस्लीमा नसरीन के पास है वह संभवतः हिंदी जगत में मैत्रेयी पुष्पा और मनीषा को छोड़कर कुछ की स्त्री विमर्शकारों के पास है। वास्तव में देशनिकाला का दंश झेलने वाली तसलीमा के पास हृदयहीन समाज द्वारा दिए गए दग्धसत्य का अनुभव है, इसलिए उनकी भाषा दुधारी तलवार की तरह पुरूष के प्रति आक्रामक और नारी के प्रति गहरी संवेदना से परिपूर्ण है। नसरीन के शब्दों में : कई लोगों का सोचना है कि वैदिक युग में भारतवर्ष में नारी को अपेक्षाक्रत सम्मान या मर्यादा दी जाती थी। इस्लाम के अविर्भाव के बाद वह मर्यादा अचानक लुप्त हो गई लेकिन मैं इसे मानने को तैयार नहीं। पुरातत्व शिलालेख, ताम्रशासनादेश (तांबे के पात्र पर लिखी गई राजाज्ञा) प्रथम युग के संपूर्ण इतिहास को वहन करते हैं। संहिता, ब्राह्मण आख्यानक, उपनिषद और सूत्र साहित्य ही मुख्य रूप से वैदिक साहित्य है। ईसा पूर्व बाहरवीं से ईसा की चौथी शताब्दी के बीच रचित साहित्य द्वारा समाज का जो चित्र उभरकर सामने आता है। उसमें नारी को कभी मनुष्य नहीं समझा गया है। [8]

विडंबना यह है कि एक ओर 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः 'जननी जन्म भूमिश्यः स्वर्गादपि गरीयसी', माता भूमिः पुत्रोःहं प्रथित्याः का अमृत गूंजता है, तो दूसरी ओर न स्त्री स्वातंत्रयमर्हति जैसे कथन उसके कौटिल्यपूर्ण आचरण व दैन्य का उद्घोष करते जान पड़ते हैं। मनुस्मृति में कौमार्यावस्था में पिता की, युवावस्था में पति की और वृद्धावस्था में पुत्र की सुरक्षा में रहना स्त्री जीवन का सत्य बताया गया है। स्वतंत्र रहने के योग्य वह नहीं है। [9]

इस कथन का प्रतिबिंब तालिबानी संस्कृति के उन देशों में तो दिखायी ही देता है। जहां एक मर्द के बिना कोई स्त्री बुर्के में भी बाजार तक नहीं जा सकती, भले ही वह मर्द उसकी सुरक्षा में असमर्थ चार–पांच वर्ष का बालक ही हो। दूसरी ओर मनुस्मृति के कथन की सत्यता तब प्रमाणित होती दिखायी देती है जब कानून बनाने वालों की नाक के नीचे दिल्ली शहर में एक अकेली रात के समय बाहर निकलने में भय खाती है और इतना सब कुछ सहने वाली स्त्री के हृदय को भेड़िये जैसा बता दिया गया तो अन्यत्र तमाम अवगुणों खानि। आज के प्रगतिशील कहे जाने वाले लोग भी पुत्री जन्म पर शंकाकुल हो उठते हैं। [10]

लेखन के क्षेत्र में स्त्री पुरूष के भेद को नकारते हुए चित्रा मुद्गल मेहरून्निसा परवेज, ज्योत्सनामिलन, प्रभाकर श्रोत्रिय आदि ने भी अपना मन्तव्य प्रकट किया है। [11]

जब तक देश की स्त्री सशक्त नहीं होगी तब तक समाज की संरचना में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आएगा। कुछ लोग स्त्री सशक्तिकरण को कानून के साथ जोड़कर देखते हैं। उनका मानना है कि कानून से ही स्त्री की स्थिति में सुधार आ सकता है। नगरों में रहने वाले कुछ वर्गों में तो यह सही है परंतु सारे देश पर नजर डालें तो यह खोखला ही लगता है। गांव, कस्बों में रहने वाली महिलाओं को तो सशक्तिकरण की हवा ने स्पर्ष भी नहीं किया। ऐसे में चन्द पक्तियों पर नजर डालें तो :–

पहले फुटपाथ से हर लाश उठा ली जाये,
फिर सड़क से कोई बारात निकाली जाये,
सिर्फ दीवार गिराने से न होगा कुछ भी,
अब तो बुनियाद की हर ईंट निकाली जाये। [12]

भारत में नारी का अस्तित्व सर्वविधित है। वहीं जन्मदाता, निर्माता, पालनकर्ती भी है। हमें नारी अस्तित्व और उत्पादकता पर टिप्पणी करने का कोई अधिकार नहीं है। आज हम जो कुछ भी हैं उन्हीं की देन है। यदि हम नारी को जो हमारी ममतामयी मां की प्रतिमूर्ति है उसका सम्मान व आदर नहीं करेंगे तो निश्चित रूप से हमारा कोई अस्तित्व स्वतंत्र स्वरूप नहीं रहेगा और मानवता पर प्रश्नचिन्ह लग जाएगा। जिसको हम लाखों बार धोने पर भी धो नहीं सकेंगे। [13]

वर्तमान समय में भी महिलाओं का अपने अस्तित्व हेतु महिलाओं का संघर्ष जारी है। वैदिक काल से लेकर वर्तमान समय में भी नारी मुक्ति के लिए संघर्ष कर रही है। नारी मानवता का आधारभूत अंग है। इसलिए यदि संबल होगी तो आधी दुनिया अवश्य ही परिवर्तित होगी। किसी भी विकसित समाज के निर्माण में स्त्री एवं पुरूष दोनों की सहभागिता आवश्यक है। वर्तमान में महिलाएं अपने गुण और शिक्षा के दम पर बड़ी संख्या में राजनीतिज्ञ, डॉक्टर, प्रोफेसर, वैज्ञानिक, प्रशासनिक अधिकारी, वकील और इंजीनियर जैसे पदों पर आसीन हैं। कला, साहित्य एवं राजनीति के क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में महिलाओं ने अपनी पहचान बनाई है लेकिन यह भी सच है कि सामाजिक स्तर, राजनैतिक जागरूकता, प्रतिभागिता एवं आर्थिक स्वावलंबन के क्षेत्र में जिस अनुपात में उन्हें अपनी उपस्थिति दर्ज करानी चाहिए थी उतनी वर्तमान में संभव नहीं हो पायी। [14]

वास्तव में स्त्री विमर्श क्या है? समाज का वह कौन सा सत्य है जो नारी को सदैव सुर्खियों में रखता है? स्त्री विमर्श को यदि परिभाषित करना हो तो कहा जा सकता है कि स्त्री से संबंधित समस्याओं, उनसे संबद्ध कारकों, स्त्री के अधिकारों, कर्तव्यों तथा स्त्री की वर्तमान स्थिति के संदर्भ में जो विचार–विनियम किया जात है, उसे स्त्री विमर्श कहते हैं। [15]

स्त्रीत्ववादी विमर्श, लेखन में जिस प्रकार सत्तात्मक मूल्यों, अवधारणाओं को चुनौती दी, उससे समाज में स्त्री की बदली हुई स्थिति, समाज परिवार में उसकी भूमिका का प्रश्न भी उभरकर सामने आया है। अतः स्त्री विमर्श को लेकर इस सोच व वैचारिकता वाले नारी के चित्र गढ़े गए हैं, इस दिशा में निरंतर गतिशील हैं, अभी इस दिशा में एक लंबी संघर्ष यात्रा तय करनी है व स्त्री लेखिकाओं की सबसे बड़ी भूमिका है कि वे तीसरी दुनिया की शोषित, पीड़ित, दलित स्त्रियों की मुक्ति के लिए सोचें व साहित्यकार लिखें।

यदि स्त्री पुनरूत्थान के प्रारम्भिक उदाहरण को देखें तो पाएंगे कि शाहबानों केस 1986 और रूप कुंवर सती कांड 1987 ये दो ऐसी घटनाएं थी, जिन्होंने भारत में स्त्री विमर्श की चर्चा जागरूकता के स्तर पर ले जाने का कार्य किया। इसकी चरम परिणति 16 दिसंबर सन् 2012 को हुए दुरूखद निर्भय दामिनी कांड के रूप में आई और इसके बाद समूचे देश ने महिला जागरूकता का एक नया शिखर उभरता हुआ देखा। आज सन् 2015 के पूर्वा) में कह सकते हैं कि स्त्री को उसकी दूरस्ता, गरिमा, उसकी अर्थवत्त लौटाने को समूचा देश कृत संकल्पित है। हालांकि आज भी स्त्री पर खाप पंचायतों, कुछ संस्कृति के ठेकेदारों, दहेज लोभियों, काम पिपासुओं की गिद्ध दृष्टि पड़ी हुई है लेकिन फिर भी सामाजिक जागरूकता के कुछ चिन्ह ये संकेत प्रदर्शित करते हैं कि उत्तरोतर स्त्री की स्थिति में सुधार आएगा और आने वाला दशक स्त्री के सर्वतोन्मुखी विकास के लिए बेहतर अवसर लेकर आएगा। अंततः महिला और Women शब्दों के लिए कुछ सूत्र बनाए हैं।

आइये देखें क्या हैं ये सूत्र :–

म	–	मजबूर नहीं मजबूत बनो।
हि	–	हिकारत नहीं हिम्मत दो।
ला	–	लाचार नहीं लायक बनो।
W	–	Waken (चैतन्य)
O	–	Overlooker (चौकस)
M	–	Meritorious (गुणवान)
A	–	Appreciable (प्रशंसनीय)
N	–	Nimbus (प्रकाशमान)

वास्तव में स्त्री शिक्षा क्या है। समाज का वह कौन सा सत्य है जो नारी को सदैव सुर्खियों में रखता है। स्त्री विमर्श को यदि परिभाषित करना हो तो कहा जा सकता है कि स्त्री से संबंधित समस्याओं, उनसे संबद्ध कारकों, स्त्री के अधिकारों, कर्त्तव्यों तथा स्त्री की वर्तमान स्थिति के संदर्भ में जो विचार – विनियम किया जाता है, उसे स्त्री विमर्श कहते हैं। [15]

स्त्रीत्ववादी विमर्श, लेखन में जिस प्रकार सत्तात्मक मूल्यों, अवधारणाओं को चुनौती दी उससे समाज में स्त्री की बदलती हुई स्थिति, समाज परिवार में उसकी भूमिका का प्रश्न भी उभरकर सामने आया है। अतः स्त्री विमर्श को लेकर इस सोच व वैचारिकता वाले नारी के चित्र गढ़े हैं। इस दिशा में निरंतर गतिशील है – अभी इस दिशा में एक लम्बी संघर्ष यात्रा तय करनी है व स्त्री लेखिकाओं की इसमें सबसे बड़ी भूमिका है कि वे तीसरी दुनिया की शोषित, पीड़ित, दलित स्त्रियों की मुक्ति के लिए सोचें व साहित्यकार लिखें।

अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि वर्तमान देश की सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक विकास को गति देने में नारी का अहम सीान है। द्रुत गति से विकास में सहायक आज की नारी वैदिक कालीन नारी के समकक्ष पुनः आ खड़ी हुई। भरपूर आत्म विश्वास के साथ नारी अस्मिता की हचान के लिए निरंतर संघर्षरत है। नारी, नारी दृष्टि से रचनात्मकता का सृजन करना चाहती है;

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. द्विवेदी राकेश, महिला सशक्तिकरण चुनौतियां एवं रणनीतियां, पूर्वराग प्रकाशन भोपाल प्रथम संस्करण 2005 पृ. सं. 31.
2. मधुकर, डॉ. डी. वी. भारतीय नारी व उसका त्याग, कल्पाज पब्लिकेशन मण्डल 2006 पृ. सं. 177, 178, 182.
3. व्होरा, आशावादी, स्त्री सरोकार, आर्य प्रकाशन मण्डल 2006 पृ. सं. 31.
4. सिंह रूपा, स्वांतत्योत्तर स्त्री विमर्श और स्त्री अस्मिता ओमेगा पब्लिकेशन 2012 पृ. सं. 51, 52.
5. वही – पृ. 21.
6. उपाध्याय, भगवत शरण – खून के छींटें इतिहास के पन्नों पर पृ. 1.
7. वही प . 12.
8. नसरीना तसलीमा – औरत के हक में – पृ. 22.
9. मनु स्मृति 913.
10. वही – पृ. 25.
11. कस्तवार रेखा – स्त्री चिंतन की चुनौतियां – पृ. 21.
12. रामसिया डॉ., नवीन क्षितिज में स्त्री विमर्श, ओमेगा पब्लिकेशन 2012 पृ. 83.
13. वही–
14. वेदबुक से फेसबुक तक स्त्री, बिसारिया पुनीत 2015, एटलांटिक पब्लिकेशंस नई दिल्ली पृ. 269.
15. अग्रवाल रोहिणी, हिन्दी उपन्यासों में कामकाजी महिला पृ. 82.